International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 2; Issue 4; July 2016; Page No. 32-35

प्रभा खेतान के उपन्यास छिन्नमस्ता में स्त्री की सामाजिक स्थिति

डॉ0 रेनू आनन्द
पीएच0डी0 –नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय,

सारांश
जब भी स्त्री की सामाजिक स्थिति एवं उसकी सामाजिक क्रियाकलापों की साहित्यिक चर्चा होती है तो, प्रभा खेतान के उपन्यासों पर अनायास ही ध्यान चला जाता है। प्रभा खेतान ने जिस बेबाकी से स्त्री के सामाजिक सरोकारों की चर्चा अपने उपन्यासों में करी है, वह बेहतरीन है। उनका उपन्यास छिन्नमस्ता भी ऐसा है, जिसमें उन्होंने स्त्री पात्रों को जीवित कर दिया है। उनके स्त्रीपात्र आधुनिक स्त्री एवं साथ–साथ परम्परागत मूल्यों को दर्शित करते हैं। भारत जैसे विकासशील देश में स्त्री की दशा कभी–भी पूर्ण रूप से सम्मानजनक नहीं रही है, और वो सदियों से संघर्ष ही करती रही है। प्रस्तुत शोध पत्र में प्रभा खेतान के उपन्यास छिन्नमस्ता के विभिन्न स्त्री पात्रों जैसे प्रिया, छोटी मां, नीना आदि को केन्द्र में रखते हुए, स्त्री की सामाजिक स्थिति की चर्चा की गई है।

मूलशब्द: समाजिक स्थिति, भेद–भाव, पराई स्त्री आदि

प्रस्तावना
साहित्य समाज का दर्पण है तो साहित्यकार समाज का दृष्टा है और स्रष्टा होता है। डा0 कमला गुप्त के शब्दों में –''उपन्यासकार समाज का यथार्थ दृष्टा होता है। वह सामाजिक जीवन की मान्यताओं और विश्वास की परिवर्तनशीलता को संवेदित सत्य के रूप में अपनी कथा–कृति के माध्यम से अभिव्यक्त करता है। उपन्यासकार के लिए समाज वह भूमि है जहां उसे जीवन का संपूर्ण चित्र उपलब्ध होता है। वह समाज की विभिन्न गतिविधियों से प्रभावित होता है और सामाजिक जीवन के बहुआयामी चित्रों को खींचता है। चित्रांकन में वह काल, समय, घटना, पात्र संख्या सभी दृष्टियों से पूरी तरह आज़ाद भी होता है।
निरंतर परिवर्तनशीलता बाहरी–भीतरी परिवेश को ध्यान में रखते हुए नये परिवर्तनों के आधार पर, मानव की परिस्थितियों और मनोवृत्तियों का चित्रण करना एक उपन्यासकार का प्रथम उत्तरदायित्व है। डा0 सुदेश बन्ना के शब्दों में– ''उपन्यासकार उपन्यास के माध्यम से ज़िन्दगी को तराशता है, छीलता है और समाज की एक चित्रावली प्रस्तुत करता है। समाज के चैतन्य प्रहरी के रूप में वह न केवल उन प्रश्नों से जूझता है जो समाज के अन्तस में जगह पाये हुए है; अपितु उन प्रश्नों की नींव पर खड़ी समस्याओं के बृहद तिलिस्म को तोड़ता भी है– महज तोड़ने के लिए नहीं, अपितु अतीत के शिलापट पर वर्तमान का मानचित्र बनाने के लिए और कतिपय ऐसे मूल्यों की स्थापना के लिए भी, जो अपनी प्रासंगिकता रखते हैं।''[1]
बीसवीं सदी के अन्तिम तीन दशकों में हिन्दी कथा साहित्य एक नयी स्त्री चेतना का उदय हुआ और साहित्य में स्त्री की पारंपरिक छवि को बदलने का आन्दोलन भी ज़ोर पकड़ने लगा। इस कालावधि में अनेक लेखिकाओं ने स्त्री विमर्श को वाणी देने का महत्तर काम निभाया है। वैश्विक और भारतीय परिप्रेक्ष्य में नारीवाद के पनरूत्थान में महिला लेखिकाओं की वैचारिक भूमिका का अध्ययन युग की मांग है।
भारत जैसे विकासशील देश में स्त्रियों को पितृसत्तात्मक समाज का समाना करना पड़ रहा है। पितृसत्ता वस्तुतः एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था है जो अभंगुर रूप में, अबाध गति से हज़ारों सालों से प्रवाहमान है। इसने स्त्री को अपना गुलाम बना रखा है और स्त्रियों पर कई प्रकार के बन्धन एवं कर्कशपूर्ण कानून लगा दिया। स्त्री का दायरा घर के चार दिवारों तक ही सीमित था। यहां सवाल सिर्फ पिछड़ेपन का नहीं, बल्कि हर कदम पर स्त्री को वस्तु के रूप में देखने, नापने–तौलने में निहित पुरातन मानसिकता से है।
हिन्दी साहित्य के साठवें दशक से महिला लेखिकाओं का एक बड़ा दल सामने उभरकर आया। इसके बहुत पहले ही विचारों की स्वतंत्रता, यौन कार्य में आज़ादी आदि के आधार पर पश्चिम में फेमिनिज़्म का सूत्रपात हो गया था। प्रकाण्ड दार्शनिक एवं फ्रेन्च लेखिका सिमोन द बोउवर की विख्यात कृतियों की लोकप्रियता से भी स्त्रीवाद का नारा बहुत मज़बूत हो उठा। स्त्री को मुक्त कराने के उपलक्ष्य में जो व्यापक कदम उठाये गये उससे साहित्य का नभो मण्डल अधिक भास्वर बन गया। अतः आधुनिक काल में लिखी गयी हर विधा जैसे–नाटक, उपन्यास, कहानी, कविता, आदि में नारी की मनः स्थिति, समस्यायें, संघर्ष एवं विद्रोह चेतना को अतिविशिष्टता से अभिव्यक्त किया गया । समकालीन हिन्दी के महिला कथाकारों में मन्नू भण्डारी, ममता कालिया, कृष्णा सोबती, मैत्रेयी पुष्पा, मृणाल पांडे, शिवानी, चन्द्रकान्ता, मणिका मोहिनी, चित्रा मुद्गल, गीतांजलीश्री, मृदुला गर्ग, अलका सरावगी, अनामिका, राजी सेठ, निरूपमा सेवती, रजनी पनिकर, कुसुम अंसल, नासिरा शर्मा तथा प्रभा खेतान ने अपने साहित्य में समाज में घटित स्त्री के बारीक से बारीक विषय को सृजनात्मक ऊर्जा प्रदान किया है। साहित्य में जो नई चेतना एवं स्फूर्ति का उदय हुआ, उसके अन्दरूनी कारणों में नारीवाद सोच एवं रचनाओं का बड़ा हाथ रहा है।

छिन्नमस्ता उपन्यास में स्त्री की सामाजिक स्थिति
सामाजिक असमानताः–
जात–पांत और धरम–करम की बातें प्रिया की अम्मा के मन में घर कर बैठी थी तभी तो मेहतर की सीढ़ी अलग थी। मेहतर घर में प्रवेश करने से पहले आवाज़ लगाता हुआ आता उसे नल छूने की मनाही थी इसलिए लछमनिया पानी डालती थी। चूंकि लछमनिया पानी डालती इसलिए अम्मा उसे आधा अछूत मानती थी इस प्रकार समाज में छोटी जाति के प्रति भेद–भाव की दृष्टि रखी जाती थी।
छिन्नमस्ता में जहां एक ओर प्रिया का सम्पन्न एवं एक भरा पूरा परिवार है जहां किसी चीज़ की कमी नहीं है वहीं प्रिया की दायी मां हैं जो निर्धन, गरीब, विधवा, असहाय हैं। जिसे अपने घर की देखभाल के लिए अपना देश (घर) छोड़कर दूसरे की सेवा करनी है। प्रिया आत्म–निर्भर होने की बात करती है कि जैसे आप अपने पैरों पर खड़ी हैं वैसे ही सभी को आत्म–निर्भर होना चाहिए तब

दायी मां कहती हैं, ''अरे हम कौउन खुशी में कमाने निकली? हमार भतार नहीं था, तभी ना?''[2]

लेकिन दाई मां एक पराई स्त्री होते हुए भी प्रिया को सगी मां से बढ़कर प्यार देती हैं उसे पालती पोशती है और कहती हैं कि प्रिया के शादी के बाद गंगा नहायेंगी। ये सब आज के ज़माने में एक सगी मां ही कर सकती है लेकिन दाई मां के मन में प्रिया के प्रति प्रगाढ़ ममता, एक निष्ठ प्यार और समर्पण भाव हैं जिसके कारण वह कई–कई वर्षों तक अपने परिवार (घर) नहीं जाती। दाई मां जो कि नीच जाति की औरत है जब चौका छू लेती है तो महाराज जी नाराज़ हो जाते हैं। जिसके प्रतिउत्तर में दाई मां को सौ गालियां सुननी पड़ती हैं लेकिन वह कहती हैं कि ''बाभन क गाली नाहीं लागत।''

प्रिया की सामाजिक स्थिति

छिन्नमस्ता में प्रभा खेतान ने प्रिया के माध्यम से समाज में जो स्त्रियों की जर्जर स्थिति है उसको बड़े ही सशक्त रूप में हमारे सामने प्रस्तुत किया है। मारवाड़ी परिवार में बेटी का पैदा होना दुख का कारण समझा जाता है। और वह दुख और भी अधिक हो जाता है जब पैदा होने वाली बेटी चौथे नम्बर की हो। प्रिया के पैदा होने पर उसकी दादी कहती हैं कि ''आ पड़ी ऊपर से ———माया सांवर, अभी तो दो व्याह बाकी है——या तीसरी और तैयार होगी। तेरे तो खर्चों ही खर्चों है।''[3]

दाई मां की निराशा भरी बातें यह बताती हैं कि समाज में स्त्री जो कि स्वयं मां, बेटी, बहु, पत्नी है वह ही बेटी के जन्म पर शोक मनाती है।

प्रिया को असीम प्रेम करता है। लेकिन प्रिया विद्रोही होती जा रही थी। अपनी मां, भाभी, जीजी, ताई, चाचियों यहां तक की अपनी शिक्षिकाओं की तरह वह घुटन भरी जिन्दगी नहीं जीना चाहती वह अपनी ज़िन्दगी को आशुओं के समन्दर से नहीं भरना चाहती इसलिए वह असीम से दूरी बना लेती है। प्रिया के मन में एक क्रान्ति का स्वर उभर रहा है। वह सोचती है क्यों नहीं लड़कियां, लड़कों की तरह खिलखिलाकर हंसती हैं मदमस्त हंसी जैसे लड़के हंसते हैं। प्रभा को लड़कियों का इठलाना और इश्क की बातें करना पसंद नहीं। प्रिया कहती हैं कि ''मैं अपने जीवन को आसुओं में नहीं नहा सकती। क्या एक बूंद आंसू में ही स्त्री का सारा ब्रह्माण्ड समा जाये? क्यो? किसलिए? रोना और केवल रोना, आंसुओं का समन्दर, आंसुओं का दरिया और तैरते रहो तुम।''[4]

प्रिया सोचती है कि क्या वह प्यार करने से डरती है लेकिन सच्चाई तो यह है कि वह कष्ट इतना अधिक झेल चुकी है कि उसे लगने लगा है कि जिस प्रकार शादी करके अम्मा, भाभी, जीजी, चाची आदि सभी आंसू नहा रही हैं तो वह शादी कर कैसे सुखी रह सकती है। उसे शादी से नहीं कष्टों से, चोट खाने से डर लगता है। वह कहती है कि ''सच रोने से, आंसुओं से मुझे बहुत–बहुत डर लगता है।''[5]

प्रिया न तो प्रेम करना चाहती हैं न शादी। कहते हैं कि एक स्त्री तभी सम्पूर्ण होती है जब उसके बच्चे होते हैं लेकिन छिन्नमस्ता में प्रिया ने देखा था कि उसकी अम्मा हमेशा बच्चों पर झींकती रहती थी, बड़ी जीजी का चार बच्चों के बावजूद अधूरापन, सल्लो जीजी का रोज़ वही माग्रेन का दर्द, बड़ी भाभी की घुटन यह दर्शाते हैं कि बच्चे सम्पूर्णता नहीं दर्द लेकर आते हैं। इसलिए प्रिया प्रेम और शादी से बचना चाहती है।

डा. चैटर्जी ने प्रभा को समझाया कि स्त्री होना कोई अपराध नहीं है हां नारी की आंसू भरी नियति को स्वीकारना बहुत बड़ा अपराध है।

1. औरत के जीवन में ज़रा–सा खुरेचों, दर्द, पीड़ा त्रासदी के बहते हुए दरिया मिलेंगे।
2. अपने पैरों पर खड़ी स्त्री का कोई निरादर नहीं कर सकता है।

प्रिया के साथ नौ वर्ष की उम्र में बलात्कार होता है और करने वाला अन्य कोई नहीं बल्कि उसका अपना सगा बड़ा भाई ही था इस घटना के बाद प्रिया के मन दहशत सी बैठ गई थी। वह अपनी बात को अपनी अम्मा से बताना चाहती थी लेकिन दाई मां के समझाने पर वह मान जाती है। दाई मां कहती हैं कि ''सुन बिटिया! हमार कहा मान और ज़िन्दगी में ई सब बात कभी किसी से जिन कहियो। आपन पति परमेसर सी भी नाहीं।''6

दाई मां के समझाने पर प्रिया को लगता है कि उससे कोई अपराध हो गया है किसी को न बताने की बात से उसे लगता है कि उसने कोई पाप किया है और वह अपराधी है जिसके कारण यह घटना उसके दिलो–दिमाग़ में एक दहशत बन जाती है, वह इस घटना को भूल जाना चाहती है पर क्या भूलना इतना आसान है। फिर वह हर पुरूष से डरती है। उसे डा• चैटर्जी से भी अकेले में डर लगता है। कि कहीं वे ऐसा वैसा व्यवहार न कर बैठे। यह कहती है कि ''छिः! मुझे नफरत है इस पुरूष जाति से। नफरत है उससे जो मासूम, छोटी, नादान लड़की को भी नहीं छोड़ता।''[7]

हमारे समाज की जो व्यवस्था है वह बहुत ही दमघोट है। इस समाज में औरतों को बोलने नहीं दिया जाता है और यदि वह अपनी बात किसी को बताती भी हैं तो उसे घटना का ज़िम्मेदार ठहरा दिया जाता है। जिसके कारण ही दाई मां प्रिया को और अधिक अपमानित न होने से बचाने के लिए उसे इस घटना की चर्चा किसी से भी न करने की सलाह देती हैं। नारी अपनी देह में, स्वयं में अत–विक्षत होकर रह जाती है। पुरूष जो बलात्कारी होता वह जो कर्म करता है उससे उसे सुख का अनुभव मिलता है। जबकि नारी के लिए जीवन भर का दर्द, घुटन, असह्य पीड़ा जिसे वह किसी से बता नहीं सकती है। प्रिया कहती है कि ''क्या सबको एक ही निर्देष मिला है अपनी मां से? अपनी बहन से? मत बोलना बिटिया कभी नहीं।

प्रिया जो कि प्रेम से, शादी से, सेक्स से घृणा करती थी एक दिन एक संभ्रान्त परिवार का अकेला बेटा प्रो. मुखर्जी उसकी ज़िन्दगी में आता है। वह कहता है कि ''मै तुमसे प्यार करता हूं——— केवल तुमसे।'' वह प्रिया को अपने घर ले जाता है प्रिया भी पूरी ईमानदारी के साथ अपने को समर्पित करती है, बिना किसी शर्त के, बिना किसी से पूंछे। लेकिन यहां भी प्रिया के साथ छलावा होता वह प्रो. शादी करके पत्नी के साथ आता है और प्रिया को धमकाते हुए कहता है कि ''मूर्ख लड़की! मैंने कब कहा था कि मै तुमसे शादी करूंगा? हम दोनों ने मौज की। बस बात खतम। और सुनो फिर कभी यहां मत आना मैं शादी–शुदा इन्सान हूं।''[8] यहां भी प्रिया को धोख ही मिलता है।

प्रिया की शादी नरेन्द्र नामक एक स्मार्ट लड़के से हुई।उसके शरीर पर पच्चास हज़ार का वह घाघरा और दस लाख का हीरेवाला सेट था। मगर नरेन्द्र भी पढ़ा–लिखा आदमी था पुरूष की उसी मानसिकता से ग्रस्त था जिससे ज़्यादर पुरूष होते हैं। वह भी अपनी हवस की भूख मिटाकर सो गया। पार्टी के लिए तैयार होकर निकलने वाली होती कि वह उसे कमरे में घसीट लेता नरेन्द्र में गज़ब की कुषाग्र बुद्धि थी वह नाक की सीध में चलने वाला व्यक्ति था जिसे अपने दाहिने–बांये देखने की फुरसत नहीं थी। नरेन्द्र में मानवीय संवेदना नाम की कोई चीज़ नहीं थी। वह बस पैसा, अच्छा खाना और सेक्स समझता था।

प्रिया मानती है कि यह उसकी गलती है क्योंकि उसने ही गुलामी स्वीकारी———गुलाम बने रहने को अपना भाग्य समझा नरेन्द्र हर छह महीने में एक से एक हसीन सेक्रेटरी बदलता रहता है और उसकी भूख मिट जाती है। प्रिया सोचती है कि वह जितना नरेन्द्र से डरेगी वह उतना ही डरायेगा। रहम की भीख मांगेगी तो उतना ही ठुकरायेगा।

''अकेले होने की पीड़ा, त्रासदी, आतंक, मैं क्या नाम दूं इसको? पर इतना प्रभाव तो मेरे मन पर पड़ा ही है। आंसुओं को मैं तेज़ रफ्तार से दौड़ते हुए सुखाती रही।''[9]

''मेरे साथ मेरा अकेलापन है, पर यह अकेलापन मुझे जीवन का अर्थ समझा रहा है। कैसे मैने अपने आपको बचाया है अपने मूल्यों को जीवन में संजोया है। हां टूटी हूं, बार–बार टूटी हूं––– पर कहीं तो चोट के निषान नहीं––– दुनिया के पैरों तले रौंदी गई, पर मैं मिट्टी के लोंदे में परिवर्तित नहीं हो पाई हूं। अड़तालीस की इस उम्र में एक पूरी की पूरी साबुत औरत हूं। जो ज़िन्दगी झेल नहीं रही बल्कि हंसते हुए जी रही है। जिसे अपनी उपलब्धियों पर नाज़ है।''[10]

छोटी मां

नरेन्द्र के पिता ने एक तिलोत्तमा नाम की स्त्री से दूसरा विवाह कर रखा था। तिलोत्तमा (छोटी मां) के पिता कलकत्ता हाईकोर्ट के एक प्रसिद्ध बैरिस्टर थे। बेटी के शादी कर लेने पर उन्होंने उसे घर से निकाल दिया था। इस तरह छोटी मां का रिश्ता यहां से हमेशा के लिए टूट गया और चूंकि नरेन्द्र के पिता पहले से शादी शुदा थे। इसलिए छोटी मां को उनका पत्नि का वह दर्जा कभी नहीं मिला। छोटी मां बिना किसी विरोध के ऐसो जीवन की मौन स्वीकृति के साथ एकोन्मुखी अग्नि की तरह पापा के लिए निरंतर जलती रहीं। उनकी पति–भक्ति, उदार मन, सहज समर्पण और बाधिर गाय सी अपनी स्थिति के प्रति मौन स्वीकृति।

प्रिया सोचती है कि क्या सिर्फ चुटकी भर सिन्दूर से ही पत्नी कहलाने का हक़ मिल जाता है और वह छोटी मां जो बीस साल से बिना फेरों के, इस सम्बन्ध को नकार दिया जा सकता था। वह अपने पति के अन्तिम दर्शन के लिए अग्रवाल हाउस में नहीं जा सकती थी क्योंकि उन्हें रंडि या रखैल का दर्जा प्राप्त था। इसलिए वह घाट पर चुपचाप जाकर नहा आई थी।

प्रिया यह सवाल उठाती है कि छोटी मां कि इस स्थिति का कौन ज़िम्मेदार है। यह समाज, परम्परा, व्यक्ति, या स्वयं छोटी मां जो यह जानते हुए एक शादी शुदा पुरूष से शादी करती है और यदि शादी की तो अपने हक़ के लिए क्यों नहीं लड़ी। उन्होंने अपनी स्थिति को मौन रूप से क्यों स्वीकार लिया।

प्रभा खेतान ने छोटी मां के माध्यम से यह बताया है कि आज भी हमारी मान्यताएं, हमारा समाज, हमारी परंपराएं हमारे ऊपर अधिक प्रभावी हैं। तभी तो हम न चाहते हुए भी अपनी एक शादी को निभाते हैं। और जिसे प्यार करते हैं उसे समाज के डर से मान्यता नहीं देते। इसे ही प्रभा ने तोड़ने की कोशिश की है। इसी परंपरा का विरोध करती हुई प्रिया जिसे नरेन्द्र से प्यार नहीं रह गया है और जो नरेन्द्र भी दूसरी औरत या (सेक्रेटरी) को छह महीने पर बदल देता है। वह अपनी शादी को नहीं तोड़ना नहीं चाहता। लेकिन जब प्रिया अपने इस रिश्ते को खत्म कर व्यापार करना चाहती है तो नरेन्द्र तिलमिला उठता है।

नीना

नीना तिलोत्तमा (छोटी मां) और नरेन्द्र के पिता की ना–जायज़ औलाद है। वह लॉरेटों में पढ़ी लड़की है जिसमें खुलापन है। वह सहज सीधी और आर–पार की बातें करने वाली लड़की है। ''देखा भाभी पापा चाहते हैं कि मेरी शादी हो जाए लेकिन मैं नहीं करूंगी। मैं पहले अपने पैरों पर खड़ी होऊंगी।''[11]

जब वह होटल में ग्रैन्ड में इंटरव्यू देकर आती है तो प्रिया के पूछने पर कि क्या पापा पसंद करेंगे। वह तपाक से जवाब देती है कि ''क्या मुझे उनकी इच्छा–अनिच्छा का खयाल करना चाहिए?'' ''भाभी, मुझे पता है कि मैं एक नाजायज संतान हूं। मम्मी कितना भी मांग में सिंदूर लगायें, उस लाल रंग में थोड़ी कालिख घुली हुई है। इसीलिए तो मम्मी का सिंदूर चमकता नहीं।''[12]

नीना कहती है कि अगर वह दुखी है तो वह सुख भी अर्जित करेगी। वह कहती है कि अपने पैरों पर खड़ी स्त्री का कोई निरादर नहीं कर सकता। नीना अपने सौतेले भाई नरेन्द्र को कोबरा और बड़ी मां को देवीजी पुकारती थी। ये नाम विद्रोह के कारण उसने रखा था। नीना प्रभा खेतान का ऐसा पात्र है। जो जीवन को नीरीह, असहाय नहीं बल्कि सशक्त और आधुनिक रूप में देखती है। वह मूक दर्शक बनकर सहन करने को तैयार नहीं है। प्रिया के शादी के लिए लड़का खोजने की बात पर नीना कहती है कि क्या शादी से आप या मां या बड़ी मां प्रसन्न है तो फिर मैं क्यों?

नीना के लिए आग हो या पानी, वह सबकुछ को ज़िन्दगी का धर्म मानती हैं, उसके जीवन की अपनी लय है। ऐसा नहीं कि अकेलापन उसे नहीं चुभता पर वह हर तूफान का हंस कर स्वागत करती है और निर्भय होकर हंसती है। नीना अपने पिता के बारे में कहती है कि उसे ऐसे बुज़दिल इंसान से सख्त नफरत है। नीना सैंतीस वर्ष की उम्र में प्रिया के बिज़नेस पार्टनर हॉफमैन के बेटे से शादी कर अपना दश छोड़ देती है। उसका पति एंडरू नीना की मां को साथ रखने को कहता है कि लेकिन वह नहीं जाती। नीना के मन में एक अपराध बोध है कि वह विदेषी लड़के से शादी कर विदेश चली जाती है जिससे उसकी मां अकेली हो जाती है। इस अपराध बोध से प्रिया उसे निकालती है और कहती है कि मैं हूं मां की देखभाल के लिए।

पश्चिम की औरत

जूडी कहती है कि हम पश्चिमी औरत ने भी बहुत सहा है जब हमारे घर उजड़े बच्चों ने साथ छोड़ा, साठ वर्ष का पुरूष केवल पैसे के बल पर बीस वर्ष की लड़की के लिए घूमने लगा, तब हम भी तिलमिला उठीं। भोग का नंगा नाच और उसमें शामिल हमारी बहनें और बेटियां थीं। जूडी कहती हैं कि प्रिया ''एक तुम ही नहीं दुःख पा रही हो हर औरत के अपने–अपने दर्द के तहखाने हैं।''13

निष्कर्ष

प्रभा खेतान जी का सबसे चर्चित उपन्यास छिन्नमस्ता है जो स्त्री के सामर्थ्य एवं शोषण को एक साथ वर्णित करता है। इस उपन्यास में प्रिया पात्र को प्रभा जी ने गढ़ा है जो उनके खुद के जीवन की कहानी है। मारवाड़ी परिवार में जन्मी प्रिया सामाजिक एवं पारिवारिक रूप में उपेक्षित, कुंठित एवं सहमी हुई बालिका का बालपन है। व्यवस्था को तोड़ने वाली औरत को जहां समाज सौ कोड़े लगाता है, वहीं पुरूष को मंच पर क्रान्तिकारी कहकर बैठाता है। औरत हर तरह मरती है लेकिन रोती हुई औरत मुझे अच्छी नहीं लगती। मुझे औरत की इस निष्क्रियता पर झुंझलाहट होती है। यह क्या घुट–घुट कर मरना–––?''[14]

लेकिन क्या औरत की ज़िन्दगी एक सही पुरूष की तलाष–भर बनकर रह जाए? यदि औरत व्यवस्था के बाहर कदम बढ़ाती है तो उसे बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है। चाहे पूरब हो या पश्चिम परिवर्तन किसी को अच्छा नहीं लगता वो भी तब जब उसकी स्वतंत्रता छिनने का डर हो। जिसे सदियों से इतनी सुविधा मिली हो।

संदर्भ ग्रन्थ

1– डा0 सुदेश बन्ना, बंजारा लोक साहित्य और समाज पृ0 69।
2– प्रभा खेतान, छिन्नमस्ता पृ0 66।
3– प्रभा खेतान, छिन्नमस्ता पृ0 26।
4– प्रभा खेतान, छिन्नमस्ता पृष्ठ 114।
5– प्रभा खेतान, छिन्नमस्ता पृष्ठ 114।

6— प्रभा खेतान, छिन्नमस्ता पृ0 18।
7— प्रभा खेतान, छिन्नमस्ता पृ0 119।
8— प्रभा खेतान, छिन्नमस्ता पृ0 122।
9— प्रभा खेतान, छिन्नमस्ता पृ0 23।
10— प्रभा खेतान, छिन्नमस्ता पृ0 24—25।
11— प्रभा खेतान, छिन्नमस्ता पृ0 144।
12— प्रभा खेतान, छिन्नमस्ता पृ0 144।
13— प्रभा खेतान, छिन्नमस्ता पृ0 187।
14— प्रभा खेतान, छिन्नमस्ता पृ0 187।